''महाकवि माघ के शिशुपालवध महाकाव्य में प्रकृति संबंधी विचारों एवं सिद्धांतों का समीक्षात्मक अध्ययन''

डॉ. ज्योति सोनी*
गाइड–डॉ. राम कुमार शर्मा*

जीवन परिचयः–यद्यपि संस्कृत साहित्य के महाकवि माघ के पितामह श्री सुप्रभवदेव थे जो श्री वर्मल नामक किसी राजा के महामंत्री थे। इनके पिता का नाम दत्तक था। विद्वानों ने इनकी स्थिति काल सप्तम् शतक के उत्तरार्द्ध से लेकर नवम शतक माना है।

पर्यावरण की रक्षा आज की एक विश्व समस्या बन गयी है। पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए वैज्ञानिक उपाय खोजे जा रहे हैं। स्थान–स्थान पर वैज्ञानिक गोष्ठियां हो रही है और विश्व सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं। वेदों के अध्ययन से विदित होता है कि प्राचीन ऋषि भी पर्यावरण के प्रति सचेत थे और उन्होंने पर्यावरण की सुरक्षा के उपायों का वेदमंत्रों में स्पष्ट उल्लेख किया था।

कालान्तर में संस्कृत वाड्मय के अनेकों काव्यों आदि में पर्यावरण के प्रति प्रेम और जागरूकता का वर्णन बड़े ही मनोहारिणी दिग्दर्शन होता है। महाकवि माघ ने भी अपने शिशुपालवधम् में पर्यावरण के प्रति सचेष्ट प्रयास उपस्थापित किया है। इनके शिशुपालवधम् महाकाव्य का गहनावगाहन करने से प्रकृति तत्वां का दिग्दर्शन किंचित् पद्यों से दृष्टव्य हैं–

''विलुलितालक संहतिरामृशन्मृगदृशां श्रमवारि ललाटजम्''

मृगनयनियों के ललाट में उत्पन्न पसी के डाल को सुखाते हुए उनके केशकलाप को हिलाने वाला नील कमलों के विकासपूर्वक जलाशयों के तरग्डश्रणियों को चपल करता हुआ पवन चलने लगा। फूल तोड़ने की इच्छा से समीप जाकर प्रेमपूर्वक स्त्री के द्वारा पकड़ा गया, नहीं झुकने वाला निरर्थक ऊँचा वनवृक्ष मिथ्या पुरूषत्व से नहीं शोभता था।

असिस्टेंट प्रोफेसर, पी. जी. कॉलेज, गुना

क्रांत दृष्टा ऋषियों, कवियों ने जिस पर्यावरण की गोद में बैठकर मंत्रों का दर्शन किया वह उनके मानस में रच बस गया था। आलम्बन, उद्दीपन व अप्रस्तुत विधान के रूप में पर्यावरण की छायामंत्रों में अभिव्यक्त हुई है। महाकवि माघ ने भी अपने शिशुपालवधम् महाकाव्य में प्राकृतिक चिन्त का आधार निरंतर तारतम्यता को बनाये रखते हुए पर्वत, नदी, वृक्ष, लता, औषधि, धान्य पशु–पक्षी ऋतु प्रभातवर्णन के माध्यम से सुस्पष्ट अभिव्यक्त किया है।

किंचित् पद्य दृष्टव्य है–

नीरन्ध्रद्रमशिशिरां भुवं व्रजन्तीः
साशक्डं मुहुखि कौतुकाकत्करैस्ताः।

अपि च

एकस्यास्तपनकरैः करालिताया
विभ्राणः सपदि सितोष्णवारणत्वम्।

सघन पेड़ों से ठण्डी भूमि पर जाती हुई उन रमजियों को सूर्य ने क्षणमात्र कृवा से हिलायी थी शाखाओं के अंतरा रमणियों ने वेग से फूटे हुए मुक्ति कोष से निकले हुए मोतियों से शोभित किये गये नदियों के रेतीले तट को टूटे हुए मुक्ताहारों से सुन्दर अपने पलंगों के समान माना। भ्रमरों ने श्रमजन्य प्रशंसनीय गन्ध से युक्त निःश्वास वायु को निरंतर सूंघकर जगंली पुष्पों की कामना नहीं की विशिष्टता को चाहने वाला कौन व्यक्ति औचित्य का विचार करता है।

ममतामयी जननी प्रकृति की गोद में बैठकर ही हम अपना जीवन सुरक्षित एवं स्वस्थ बना सकते हैं। अतः प्रकृति पूजनीय है। इसी भावना को सुस्पष्ट ध्यातव्य विषय बनाकर प्रकृति की साक्षात् गोद में स्थित महाकवि माघ ने अपने महाकाव्य शिशुपालवधम् में प्रकृति संबंधी सिद्धांतों की अभिव्यक्ति दी है। अतः यहां किंचित् पद्य दृष्टव्य है।

''गतया पुरः प्रतिगवाक्षमुखं दधतीरतेन भृशमुत्सुकताम्''

रति के अत्यंत उत्कण्ठित कोई रमणी खिड़की की ओर गयी हुई दृष्टि से अर्थात् खिड़की की ओर नेत्र लगाकर अस्ताचल के तथा सूर्य के मध्यभाग को मानो नाप रही थी अर्थात् अब सूर्य और अस्ताचल के बची में एक हाथ बांकी है। अब आधा हाथ बाकी है ऐसा अन्दाज लगा रहे थे। सांयकाल की अधिक ठण्डी हवा से धीरे–धीरे हिलती हुई लतारूपी अंगुलियों वाले बुलाते हुए निवास स्थान वृक्षों के लिए पक्षी–समूह मानों प्रत्युत्तर दे रहे थे।

प्राकृतिक शक्ति को महाकवि अच्छी प्रकार से जानते थे और उसकी उपासना में ही स्वतः रहते थे। वे पर्यावरण के संरक्षक थे और प्रकृति में उत्पन्न विकृति से घटित गंभीर परिणामों को दिव्य सृष्टि से देखते थे। महाकवि माघ की

न केवल पर्यावरण के समस्त विषयों पर सजगता थी, अपितु उसकी संरक्षण को भी महत्व दिया है। क्योंकि वे सृष्टि एवं प्रलय में प्रकृति एवं पर्यावरण के ज्ञाता थे। अतः महाकवि माघ के महाकाव्य शिशुपालवधम् में प्रकृति का दार्शनिक स्वरूप के किंचित् दृष्टव्य पद्य उद्धत हैं–

'' कदली प्रकाण्डरूचिरोरू तरौ जघनस्थलीपरिसरे महति ''

किसी रमणी ने केले के खम्भे के समान रमणीय जघनरूपी वृक्षवाले विशाल जघनस्थलरूपी प्रदेश अर्थात् जघन प्रदेश में करघनी की लड़ी रूपी मोटे रस्से से कामदेवरूपी हाथी बांध दिया अर्थात् करघनी पहनने से उस रमणी का जघन प्रदेश अतिशय कामवर्धक हो गया।

महाकवि माघ के शिशुपालवधम् महाकाव्य में प्राकृतिक वर्णन की रमणीयता ही उनके पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी प्रतिभा और आकर्षण को प्रदर्शित करती है। दशम शताब्दी में उत्पन्न हुए महाकवि माघ ने तात्कालिक पश्चिम भारत की नदियों, पर्वतों, वनों उपत्यकाओं, अधित्यकाओं तथा षड्ऋतुओं का मनोहर चित्रण किया है।

शिशुपालवधम् में प्रकृति तत्व का अन्वेषण करने के लिए हमें माघ के उन पद्यों का गहन समीक्षण करना होगा जिनमें भारत की तात्कालिक प्राकृतिक सुषमा का कवित्वपूर्ण चित्रण हुआ है।

शायद इसीलिए उनके विषय में कहा गया है–

''नवसर्गगते माघे नवशब्देन विद्यते''